''वर्तमान शिक्षा में शिक्षकों के बदलते हुए व्यावसायिक मूल्य''

मुकेश कुमार मीणा
ईमेल :- mmeena658@gmail.com

प्रस्तावना :– शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी और समाज का गहरा सम्बन्ध है। शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम से परम्परा की धरोहर को एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी तक पहुचाते है, इससे संस्कृति व सभ्यता की निरन्तरता बनाये रखने में सहायक होते है। वही परिस्थितिजन्य परिवर्तन का माध्यम बनते है। वे परिवर्तन की दशा और दिशा निर्धारित कर उसके वैकल्पिक प्रतिरूप तैयार करते है, प्रावधिक साधन जुटाते है और परिवर्तित नवाचार मूल्यों के लिए मानसिकता निर्मित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। शिक्षक का ज्ञान आने वाली पीढ़ी में सम्प्रेषित होता है वरन वह छात्रों के मार्गदर्शन और बौद्धिकता विकसित करने के लिए भी महत्वपूर्ण होता है।

वर्तमान में भारतीय शिक्षा और शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में परिवर्तन होता जा रहा है उसका समसामयिक जीवन के बदलते हुए सन्दर्भो से बहुत कम सरोकार है वह आज या आने वाले कल की चुनौतियाँ स्वीकार नही करती बल्कि अपने ढ़ाँचे को सुरक्षित रखने में ऐसी तल्लीन है कि उसके पास अपने ही वृहत्तर प्रायोजनों पर विचार करने का समय नही है जिसके फलस्वरूप समसामयिक जीवन के बदलते संदर्भो से उसके रिश्ते कमजोर पडते जा रहे है इसी के साथ शिक्षा से जुड़े शिक्षकों के आयाम भी बदलते जा रहे है। शिक्षकों ने शिक्षा पद्धति के साथ हर समय अपने आप की भूमिकाओं को बदला है। वर्तमान शिक्षा नीति में शिक्षा से जुड़े शिक्षक शिक्षा को उद्योग मानकर अपने हितों की पूर्ति में संलग्न है।

वर्तमान में शिक्षा एक उद्योग का रूप ले चुकी है। आधुनिक युग में शिक्षक एवं शिक्षण संस्थाओं का कार्य भार एवं महत्व बहुत बढ़ गया है। भारतीय संस्कृति में अध्यापक के लिए गुरू शब्द को प्रयोग होता है जिसका अर्थ भारी, वजनदार बड़ा ही गरिमामय होता है। दुसरे शब्दों में शिक्षक का पद गुरू का पद है गुरू शब्द

अपने आप में विशेषता रखता है उत्तम विचार वाले, उच्च संस्कार वाले, नैतिकता के पुजारी, निष्ठावान व्यक्ति, समदर्शी, सहृदयी और विषयों का समुचित ज्ञाता ही सच्चे गुरू पद का अधिकारी है। भारतीय धर्मशास्त्रों में गुरू को भगवान के समान माना गया है।

आज इस पद को धारण करने वालों को बड़े ही शक्तिशाली कन्धों की आवश्यकता है इस व्यवसाय को वहन करने हेतु केवल वही व्यक्ति, जो अपने कार्य के प्रति निष्ठावान, सच्चरित हो तथा जिनमें पढ़ने की भूख हो, चुने जाने चाहिए। लेकिन अफसोस की बात यह है कि संसार के सर्वोत्कृष्ट पद को विज्ञान एवं तकनीकी से सुसज्जित करने के बावजूद भी शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है, गिरावट दृष्टिगोचर है और इसका कारण है हमारी सामाजिक व्यवस्था, वर्तमान शिक्षा व शिक्षा पद्धति और हमारे आज के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि यह वह अवस्था या स्टेज अथवा प्लेटफार्म है जहॉ से शिक्षार्थी अपने भावी जीवन के विकास की यात्रा की शुरूआत करते है, इसी प्लेटफार्म से देश के भावी कर्णधारों के बनने और बिगड़ने की शुरूआत होती है। इस स्तर पर विद्यार्थी की वही स्थिति होती है जो एक चौराहे पर खड़े राहगीर की जिसके चारों और रास्ते है लेकिन वह सही रास्ते की जानकारी से अनभिज्ञ है। इस स्तर पर यदि विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा सही दिशा–निर्देश मिल जाये तो वे सफलता के शिखर पर पहुॅच सकते है और गलत ज्ञान मिलने पर पतन के गर्त में भी समा जाते है। इसलिए इस स्टेज पर शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है वे शिक्षार्थियों के लिए सही मार्गदर्शक का कार्य करते है। शिक्षक का ज्ञान न केवल आने वाली पीढ़ी में सम्प्रेषित होता है वरन वह छात्रों के मार्गदर्शन और बौद्धिकता विकसित करने के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। समकालीन भारतीय माध्यमिक शिक्षा और शिक्षकों के मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है इससे अनेक अंतर्विरोध और अन्तर्द्वन्द पैदा हो रहे है। आज हमारे अध्यापक अध्यापन को कर्त्तव्य या दायित्व के रूप में नही अपितु एक व्यवसाय के रूप में लेते है। शिक्षकीय व्यवसाय में शिक्षक का सन्तोषी होने का भाव

उसकी अपनी सन्तुष्टि और असंतुष्टि श्रेष्ठता और निम्नता एवं अच्छे और बुरे के बीच चयन के दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है अन्य व्यावसायों की चकाचोंध से प्रभावित न होना और अपने ही व्यवसाय को अच्छाा मानना एक सार्थक मूल्य का परिचारक है। केवल रोजगार प्राप्त करने की दृष्टि से शिक्षक बनने वाला व्यक्ति कभी सफल शिक्षक नही बन सकता, जबतक शिक्षक के रूप में वह निरन्तर स्वयं को स्थापित करने में दृढ़ संकल्पित न हो। रविन्द्र नाथ टैगोर ने सही कहा है कि एक दीपक जब तक उजाला नही कर सकता जब तक कि वह स्वयं नही जले। डॉ. डी.एस. कोठारी ने शिक्षा समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा है कि भारत का भाग्य तो वास्तव में कक्षाओं में निर्मित हो रहा है'' शिक्षक देश व बालकों के भविष्य का निर्माण करता है इस लिए देश को उच्च स्तर पर ले जाने और सही दिशा प्रदान करने वाले श्रेष्ठ अध्यापकों के उचित मार्गदर्शन से हम अज्ञान के गहन अंधकार से निरन्तर दिव्य प्रकाश की ओर उन्मुख हुए है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षक के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि गुरू अपने शिष्य की प्रवृति बदलने में अपनी समस्त शक्ति लगा सकता है। वह अपनी आत्मा को शिष्य की आत्मा में प्रविष्ट करा सकता है तथा अपनी दिव्य दृष्टि से शिष्य के मन में झांक सकता है''

शिक्षक वास्तव में मनुष्य को सच्चे अर्थो में मानवीय गुणों से सुसज्जित करता है, बालक में छिपी प्रतिभाओं को बाहर निकालकर उन्हे सकारात्मक दिशा प्रदान करता है शिक्षक के बारें में विलियम जेम्स ने कहा है कि ''शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य विद्यार्थियों में उन आदतों को विकसित करना और सिखाना है, जो उसके लिए जीवन भर लाभप्रद रहे। अध्यापक का उच्च व्यक्तित्व उसकी कार्य के प्रति निष्ठा, उच्च मनोंबल तथा सामाजिक समायोजन ही ऐसे श्रेष्ठ गुण है जो राष्ट्र को उन्नति के शिखर तक पहुॅचाने में सहायता करते है। पाश्चात्य विद्वान अलवर्ट आइस्टिन ने भी अध्यापक के मनोबल की महत्ता को दर्शाते हुए इस सत्य को स्वीकारते हुए कहा है कि ''अगर किसी विद्यालय को उन्नति के शिखर तक पहुॅचाना हो तो उसे अपने यहॉ कार्यरत अध्यापकों के मनोबल को बढ़ाना होगा ताकि वे विद्यालय के विकास में स्वयं को समर्पित कर सकें।''

वर्तमान समय में सारी शिक्षा का उत्तरदायित्व शिक्षकों के कन्धों पर है और अध्यापक कुम्भकार है, जो बच्चें रूपी घडों को जैसा आकार और रूप देना चाहे दे सकता है। इस प्रकार यदि यह कहा जाये कि शिक्षक भारत के भाग्य विधाता और भविष्य निर्माता है तो शायद कोई बड़ी बात नही होगी,क्योंकि भारत के भविष्य रूपी बच्चों को बनाने एवं बिगाड़नें का दायित्व अध्यापक का ही है, बच्चे कोरे कागज के समान है शिक्षक उन्हे जैसा स्वरूप देगा वैसे ही ढल जायेंगे। मगर अफसोस की बात यह है कि जो शिक्षक स्वयं अंधकार में डूबा हुआ है, अपने आप में उलझा हुआ है वह भारत का निर्माण कैसे करेगा।

वर्तमान का यथार्थ यही है। आखिर हो भी क्यों नही? अध्यापक ईश्वर का गढ़ा हुआ कोई विशेष फरिश्ता तो है नही जो इस दुनिया से उठकर रह जाता है आखिरकार वह भी तो समाज का ही अभिन्न अंग है। अतः उसकी भी कुछ आवश्यकताऐ एवं समस्याऐ होना कोई अस्वाभाविक बात नही है इन्ही परेशानियों की वजह से उसमें (शिक्षक में) कार्य के प्रति असन्तोष, शिक्षण व्यवसाय के प्रति उसके मनोबल का गिरना, शैक्षिक और सामाजिक क्षेत्र में समायोजित होने की समस्या एवं व्यक्तित्व में बदलाव आ जाता है।

आज हमारे देश में शिक्षा का काफी प्रचार प्रसार हो रहा है किन्तु फिर भी शिक्षा जगत आज सामान्य मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूर्णतः विफल है, जिसके कारण शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। आज हमारी शिक्षा अर्न्तमुखी होती जा रही है। इसका मूल कारण अध्यापक की अपने व्यवसाय के प्रति असंतुष्टि ही है। असंतुष्ट अध्यापक आशानुरूप वेतन न पाने से परेशान होता है जिसका प्रभाव उसके मानस पटल पर पड़ता है और वह नाना प्रकार की परेशानियों को लेकर जब बच्चों को शिक्षा प्रदान करता है तो बच्चों को पढ़ानें में उसका मन नही लगता, जिसका नकारात्मक प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है''

वर्तमान समय में शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में जो परिवर्तन आ रहे है उनकों जानने हेतु मैनें एक व्यक्तिगत अध्ययन किया जिसके चार प्रमुख बिन्दु रखे यथा–

1. शिक्षकों को शिक्षादान की दृष्टि से प्रदान करनी चाहिए एवं धन को गौण मानना चाहिए
2. अध्यापन का कार्य जितना वेतन उतना कार्य की दृष्टि से किया जाना चाहिए।
3. प्राप्त आय से ही संतुष्ट रहकर जीवन यापन करना चाहिए।
4. समय के अनुरूप अध्यापन एवं पैसा कमाने का कार्य दोनों करना चाहिए।

इन चारों कथनों का सारांश इस प्रकार निकल कर आया कथन 1. एक शिक्षक को शिक्षा दान की दृष्टि से प्रदान करना चाहिए एवं धन को गौण मानना चाहिए के विचार से 52 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है, कथन 2 है कि अध्यापन का कार्य जितना वेतन उतना कार्य की दृष्टि से किया जाना चाहिए इस कथन के प्रति 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है, कथन 3 प्राप्त आय में सन्तुष्ट रहकर जीवन यापन करना चाहिए इसके प्रति 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति दी है। कथन 4 है कि समय के अनुरूप अध्यापन और पैसा कमाने का कार्य दोनों करने चाहिए इस कथन के प्रति 29 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने मत प्रकट किये है। शिक्षकों के आचरण से जुडे दो महत्वपूर्ण कारक धन और कर्म के संदर्भ में उत्तरदाताओं ने शिक्षकों के उस कथन को सर्वाधिक महत्व दिया जिसमें एक शिक्षक को आज भी शिक्षा दान की दृष्टि से प्रदान करनी चाहिए एवं धन को गौण मानना चाहिए जबकि द्वितीय वरीयता में सहमति देने वाले उत्तरदाताओं ने इस कथन से सहमति व्यक्त की है कि समय के अनुकूल अध्यापन एवं पैसा कमाने का कार्य दोनों करने चाहिए। यह कथन शिक्षक के जीवन में जहॉ धन के महत्व को निरूपित करता है वही समय के अनुकूल अध्यापन की भावना के विचार के प्रति भी अपनी सहमति व्यक्त करता है। प्राप्त आय में ही संतुष्ट रहकर जीवन यापन करने के विचार से सहमति कम है और अध्यापन का कार्य जितना वेतन उतना कार्य की दृष्टि से किया जाना चाहिए के कथन के प्रति सहमति उससे भी कम है। शिक्षा दान की दृष्टि से प्रदान करना एवं धन को गौण मानने की प्रवृत्ति के कथन के प्रति लगभग 52 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है। शेष 48 प्रतिशत अन्य कथनों की सहमति में विभाजित हो गए है।

इस प्रकार व्यक्तिगत अध्ययन से पता चलता है कि केवल 52 प्रतिशत शिक्षक ही अपने अध्यापन कार्य को अपना कर्त्तव्य समझकर निःस्वार्थ भाव से छात्रों को शिक्षा प्रदान करते है जबकि 48 प्रतिशत शिक्षक शिक्षण कार्य को अपना कर्त्तव्य न समझकर एक व्यवसाय समझते है जिनका उद्देश्य केवल धन कमाना है, इस प्रकार निष्कर्ष रूप में आज हम कह सकते है कि दिनप्रतिदिन शिक्षकों के मूल्यों में परिवर्तन आता जा रहा है। शिक्षक अपने मूल उद्देश्य से भटकते जा रहे है वे शिक्षण जैसे पवित्र कार्य को केवल धनोपार्जन का साधन बनाते जा रहे है। विद्यालयों में देर से जाना, जल्दी आना वे अपना परम धर्म मानते है जिसके परिणामस्वरूप आये दिन विद्यालयों में शोर शराबा, हंगामा, घेराव, तालेबन्दी की खबरे अखबारों में पढ़ने को मिलती है। जिसका सीधा प्रभाव छात्र/छात्राओं के अध्ययन पर पड़ता है। कई अध्यापक तो केवल पोषाहार चखने के लिए विद्यालय आते है, स्कूल में होते हुए भी कक्षा में जाकर नही झांकते। ऐसी स्थिति में आज हमारी और हमारी सरकार की जिम्मेदारी है कि शिक्षकों को अपने कार्य के प्रति निष्ठावान बनाने हेतु प्रेरित करें। उनकी समस्याओं को सुने, समझे और हल करे, शिक्षक भी अपने आप में सुधार करें वे शिक्षण कार्य को व्यवसाय न समझकर अपना नैतिक कर्त्तव्य समझे। वे केवल उपस्थिति दर्ज कराने एवं पोषाहार का स्वाद लेने ही स्कूलों नही जाये बल्कि अध्यापन कार्य को अपना धर्म समझकर भारत के भावी नागरिकों का सही ढ़ग से निर्माण करने के लिए सही समय पर विद्यालयों में जायें और अपनी कक्षाए लेकर अपने बौद्धिक बल से छात्रों को ज्ञानार्जन करवाये और लाभान्वित करें।

वर्तमान में शिक्षको के गिरते मनोबल के पीछे सरकार भी जिम्मेदार है। शिक्षकों के पास सरकार ने इतने अधिक कार्य सौंप रखे है कि एक संस्था या विद्यालय में दो तीन शिक्षकों को तो वर्षभर डाकिये की तरह डाक तैयार करने में ही साल बीत जाता है उनको तो कक्षा में जाने को मौका ही नही मिलता। अधिकांश बच्चे तो ऐसे शिक्षकों का नाम तक भी नही जानते। वर्तमान में सरकार ने चतुर्थ श्रैणी कर्मचारी और बाबू के पद तो लगभग खत्म ही कर दिये है जिसके चलते सारे कार्य शिक्षको को ही करने पड़ते है। अधिकांश विद्यालयों में स्टॉफ की कमी है यदि किसी विद्यालय में स्टॉफ भी भरा पूरा है तो वहॉ शिक्षक दो धडों में बटे हुए मिलेंगे। गुटबन्दी के चलते वे एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते हुए मिलेंगे। शिक्षकों की

गन्दी राजनीति और आपसी संघर्ष के कारण विद्यालय जैसी पवित्र संस्था का पर्यावरण दुषित होता जा रहा है वही उस पर्यावरण में रहने वाले अपने आप में घुटन महसूस कर रहे है। आज राजनीति इतनी गन्दी हो गयी है जिसके कारण शिक्षा के पावन मंदिर भी इसकी भेंट चढ़ रहे है, आये दिन हम अखबारों में ऐसी अनेकों घटनाओं को पढ़ते है जिनसे हमारा दिल दहल जाता है। विद्यालयों में प्रधानाध्यापक शराब पार्टियॉ कर रहे है, नशे में चूर अध्यापक कुर्सी से लुड़क रहे है। मॉ शारदे के पावन मंदिर में शिक्षक अपने ही छात्रों के साथ गलत हरकते करने से बाज नही आ रहे, वे विद्यालयों में अश्लीलता का नंगा नाच कर रहे है। अफसोस की बात तो यह है कि इनकी कोई चाहे कितनी ही शिकायत करले पर उनका कुछ विगड़ने वाला नही है। ऐसा क्यों ? इसका उत्तर शायद आप समझ गये होंगे। वर्तमान समय की गन्दी राजनीति है क्योंकि ऐसे कर्म करने वालों का कोई न कोई नुमाइन्दा, संरक्षक, शुभचिन्तक, रिश्तेदार राजनीति में उच्च पद पर आसीन होगा। और उसके कहने पर प्रशासन सही को गलत और गलत को सही करके कही दोषी को दण्ड के बजाय आम जनता के भय से उस व्यक्ति की सुरक्षा करता है उनको कही कुछ हो नही जाय इसकी सारी जिम्मेदारी प्रशासन, नुमाइन्दे के कहने पर अपने उपर ले लेता है।

प्रशासन ऐसे लोगों को दण्ड देने के बजाय संरक्षण व सुरक्षा प्रदाान करता हुआ मिलेगा। जिससे उनके हौसलें पस्त होने के बजाय बुलन्द होते जा रहे है। जिनके फलस्वरूप प्राचीन भारतीय शिक्षा की पवित्र गुरू शिष्य परम्परा दम तोड़ती नजर आ रही है, शिक्षक–छात्र सम्बन्धों में परिवर्तन आता जा रहा है। गुरू शिष्य के नाते आधुनिकता की चकाचौंध में तार तार होते नजर आ रहे है जिनके एक नही अनेक कारण है। जिससे यह समस्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। यदि समय रहते इन समस्याओं का हल ढुढ़ लिया जाये तो शायद बचे हुये भारतीय संस्कृति के संस्कार और शिक्षा के मूल्यों की सुरक्षा की जा सके।

वर्तमान समय में शिक्षकों को अपना कर्त्तव्य बोध कराने एवं उनके शिक्षा मनोबल को बढ़ाने हेतु सरकार को निम्नलिखित प्रयास करना चाहिए।

1. वर्तमान सन्दर्भ में अध्यापकों की शिक्षण स्थिति में सुधार लाने हेतु सरकार को शिक्षको की आर्थिक स्थिति में सुधार करना चाहिए
2. सरकार को अध्यापकों की मानसिकता को दुष्प्रभाव से बचाने हेतु उनसे व्यक्तिगत तौर पर सुझाव लेने चाहिए।
3. शिक्षण स्तर में सुधार लाने हेतु अधिक से अधिक नवाचारी विषय–विशेषज्ञों से परामर्श लेकर नई नीतियों को निर्माण करना चाहिए।
4. अध्यापकों की सामाजिक स्थिति एवं उनके पद प्रतिष्ठा को सम्मान देने के हेतु समय समय पर उन्हे सरकारी समारोहों में पुरस्कृत करना चाहिए।
5. शिक्षण व्यवस्था को जहाँ तक संभव हो राजनीति से पृथक रखना चाहिए।
6. अध्यापकों की पारिवारिक स्थिति को समझ कर उनकी इच्छानुसार उन्हे पदस्थापित किया जाना चाहिए।
7. वर्तमान शिक्षा प्रणाली की वास्तविक स्थिति को जाँचने हेतु सरकार को सम्पूर्ण भारत में सर्वे कराने के लिए एक आयोग का गठन करना चाहिए।
8. सभी अध्यापकों को नवाचारी शिक्षण विधियों का ज्ञान प्राप्त करनें लिए सेवारत प्रशिक्षणों में भाग लेने हेतु बाद्य करना चाहिए।
9. शिक्षकों को मतदान, जनगणना आदि कार्यो की जिम्मेदारी से मुक्त करना चाहिए।
10. शिक्षकों का मनोबल बढ़ाने के लिए अच्छी उपलब्धि वाले अध्यापकों को 15 अगस्त व 26 जनवरी को विद्यालयों में ही पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
11. पोषाहार व्यवस्था की जिम्मेदारी से शिक्षकों को मुक्त किया जाये।

मूल्यांकन :–निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि आधुनिक शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों का यह अध्ययन और इससे प्राप्त परिणामों से भारत के

विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों को समझने में सहायता प्राप्त होगी। 21 वीं सदी में शिक्षकों के परम्परागत जीवन मूल्यों में बहुत तेजी से बदलाव आया है और वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव उनके जीवन पर परिलक्षित होता है। आज शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक शिक्षा कर्म से विमुख होते जा रहे है वही शिक्षा कर्म के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ और समर्पित एवं व्यसन रहित शिक्षक भी है। लेकिन इनका अनुपात बड़ी तेजी के साथ कम होता जा रहा है। शिक्षा परिसरों में शिक्षक जहाँ विद्यार्थियों के बीच अपना प्रभाव खोता जा रहा है। वही समाज में उनकी प्रासंगिकता पर अनेक प्रश्न चिन्ह लग रहे है। विद्यालयी शिक्षा में शिक्षकीय व्यवसाय का सम्मान अब उतना नही रहा जितना की प्राचीन काल में गुरू का होता था। शिक्षक गुरू ही नही व्यावसायिक शिक्षक बनकर रह गये है और उनके स्वयं के अमर्यादित और मूल्यहीन आचरणों ने मूल्यवान और आचरणवान शिक्षकों के सामने एक संकट उपस्थित कर दिया है। अतः आधुनिक विद्यालयी शिक्षा में भविष्य की तलाश करने वाले शिक्षकों को अपने तुच्छ स्वार्थो से उपर उठकर मूल्यों भरी नवसृजनात्मक शिक्षा की शुरूआत करनी होगी। तभी हम अपनी गौरवाशाली शिक्षा परम्परा के अनुकूल विद्यालयी शिक्षा में विश्वस्तरीय मानक स्थापित करने में सफल होगें।

मुकेश कुमार मीना
शोध छात्र
कैरियर पाइंट युनिवर्सिटी कोटा
मोबा. 9983221073